Faculty of Arts

(1) विषय–संस्कृत (स्नातक स्तर)

Course Outcomes (अधिगम उपलब्धि)

- संस्कृत नाट्य साहित्य को सामान्य रूप से समझ सकने में सक्षम होंगें।
- नाटक की पारिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित होंगें।
- नाटक में प्रयुक्त रस, छन्द एवम् अलंकारों का सम्यक् बोध कर सकेंगें।
- संवाद एवम् अभिनय–कौशल में पारंगत होंगें।
- नवीन पदों के ज्ञान द्वारा उनके शब्दकोश में वृद्धि होगी।
- भारतीय सांस्कृतिक तत्त्वों एवं मूल्यों को आत्मसात् कर, भारतीयता के गर्वबोध से युक्त उत्तम नागरिक बनेंगें।
- व्याकरण परक शब्दों की सिद्धि प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगें।
- व्याकरण शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेगा।
- संस्कृतव्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगें।
- संस्कृत–वर्णों के शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास होगा।
- स्वर एवं व्यंजन के मूल भेद को समझकर पृथक् अर्थावगमन की क्षमता विकसित होगी।
- स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग सन्धि का विधिवत् ज्ञान एवम् उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।
- विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने में सक्षम होंगें।
- छन्द की विविध परिभाषा उनके भेद एवं नियमों को समझकर सामर्थ्यवान् बनेंगें।
- संस्कृत अलंकारों के ज्ञान के माध्यम से काव्य के सौन्दर्य का बोध कर सकेंगें।
- कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकक्षमता का विकास होगा।
- शब्द ज्ञान कोष में वृद्धि होगी।
- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विविध भेदों से परिचित हो सकेंगें।
- वे संस्कृत पद्य साहित्य की सुगीतात्मकता का सौन्दर्य बोध कर सकेंगें।
- उनमें काव्य में प्रयुक्त रस, छन्द एवम् अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित होगी।
- पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।
- विद्यार्थियों के शब्दकोश में रुचि होने के साथ–साथ वे संस्कृत श्लोकों के शुद्ध स्वर उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगें।
- विद्यार्थी संस्कृत गद्य साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर गद्यकाव्य के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगें।
- सम्बन्धित साहित्य के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होगा।
- राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल होगी तथा उत्तम नागरिक बनेंगें।

- वाच्य के नियमों एवं कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य इन भेदों को जानकर अनुवाद एवं भाषागत शुद्धता के कौशल में सक्षम होंगें।
- संस्कृत गद्य धारा प्रवाह एवं शुद्ध वाचन का कौशल विकसित होगा।
- विद्यार्थी संगणक के प्रयोग से E-Content एवं डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग कर पाने में समर्थ होंगें।
- संस्कृत भाषा और साहित्य के नित–नूतन अन्वेषण को खोज पाने तथा उससे स्वज्ञान–कोष में वृद्धि कर पाने योग्य होंगें।
- संगणक के प्रयोग के माध्यम से संस्कृत ज्ञान के प्रचार–प्रसार एवम् आदान–प्रदान करने में कुशल बनेंगें।
- पारंपरिक एवं वैश्विक ज्ञान में सामंजस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवम् जीविकोपार्जन के नवीन मार्ग खोजने का कौशल विकसित होगा।
- व्याकरणशास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेगा।
- विद्यार्थियों में निबन्ध एवम् अनुच्छेद लेखन क्षमता का विकास होगा।
- संस्कृत पत्र लेखन कौशल में वृद्धि होगी।
- वैदिक वाङ्मय एवं संकृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
- वैदिक एवम् औपनिषदिक संस्कृति के प्रति गौरव बोध होगा।
- वेदोक्त सन्देशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीकरण होगा।
- उपनिषद् का सामान्य परिचय एवं निहित उद्देश्यों का अवबोध होगा।
- औपनिषदिक कर्म, संयम, शक्ति एवं त्याग मूलक संस्कृति से परिचित होंगें।
- वैदिक एवम् औपनिशदिक संस्कृति के प्रति गौरव बोध होगा।
- वैदिक सूक्तों के माध्यम से विद्यार्थियों को तत्कालीन आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य का निदर्शन होगा।
- भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
- दर्शन में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।
- भारतीय दर्शन में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगें।
- गीता ज्ञान रहस्य द्वारा सृष्टि कल्याणार्थ भाव विकसित होंगें।
- संस्कृतभाषा एवं व्याकरण की वैज्ञानिकता का अवबोध होगा।
- ध्वनि के प्रारम्भिक एवं वर्तमान स्वरूप तथा ध्वनि परिवर्तन के कारणों के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित होगी।
- पदों की सिद्धिप्रक्रिया के माध्यम से शब्दनिर्माण की वैज्ञानिकता से परिचित होंगें।
- आधुनिक संस्कृतसाहित्य के विधाओं के माध्यम से नवीन बिम्बविधानों एवं नवीन विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

(2) विषय– संस्कृत (स्नातक–स्तर)

Programme outcomes (POS) (कार्यक्रम के परिणाम)

- विद्यार्थियों को लेखन, वाचन एवम् अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त होगी।
- सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषागत पारंगत करके उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी।
- आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता के धारक होंगें।
- नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान् व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगें।

(3) विषय–संस्कृत (स्नातक स्तर)

Programme Specific Outcomes (PSOS) (कार्यक्रम के विशिष्ट परिणाम)

- सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में संस्कृतभाषा के प्राचीन महत्त्व एवम् उसकी वर्तमान प्रासांगिकता को जानने–समझने योग्य होंगे।
- संस्कृतसाहित्य की विभिन्न विधाओं (गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण इत्यादि) से सुपरिचित होकर संस्कृत मर्मज्ञ बन सकेंगें।
- संस्कृतव्याकरण के विभिन्न अंगों के ज्ञान द्वारा भाषा के शुद्ध अध्ययन, लेखन एवम् उच्चारण के माध्यम से अभिव्यक्ति–कौशल का विकास होगा।
- आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, नित्यनैमित्तिक कर्मकाण्ड आदि के माध्यम से जीविकोपार्जन के योग्य बनेंगें।
- वैदिक एवं लौकिक–संस्कृतसाहित्य की समृद्धता एवं तन्निहित नैतिकता व आध्यात्मिकता को अनुभूत कर भारतीयसंस्कृति के महत्त्व को वैश्विक स्तर तक पहुँचाने में सक्षम होंगें।
- धर्म–दर्शन, आचार–व्यवहार, नीतिशास्त्र एवं भारतीयसंस्कृति के मूलतत्त्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान् मानव एवं कुशल नागरिक बनें (बन सकेंगे)।
- समसामयिक–समस्याओं के समाधान के रूप में संस्कृतसाहित्य में निबद्ध सर्वांगीणता के प्रति शोधपरक दृष्टि का विकास होगा।

MShukla 06/04/2021

(डॉ0 मूलचन्द्र शुक्ल)
प्रभारी, संस्कृत विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामनगर (नैनीताल)

प्राचार्य
प्राचार्य
राज० स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामनगर (नैनीताल)